भरे में कहाः या शिकायाय होता . और उन के साथी या करने के लिए बेकरार होते ,जब की उन ने ऐसी कोपी हरकत नहीं की, जो भी ऐसे कोई हरकत करता है ताकि वोह अल्लाह के करीब आ सके एक निवानाता है , और अल्लाह ने इसकेलिए कोई इजाज़त नहीं दी है.

इसीलिये हसान खान के दुस्त जोकि काफी मशहूर हैं –मेक्कः की कुछ पर्वतों , थोर पर्वता को लेके के बारे में कहा “ इन में से किसी भी पर्वता पे जाना कोई सुन्नाह नहीं है”.

निवंतैन और कुछ नासुविकर्जनक करवाएँ जो तिरिथ करते हैं.

कुछ तिरिथ ऐसे निवंताओं या नासुविकार्जनक करवाएं में शामिल होतें हैं जिन की इजाज़त अल्लाह ने नहीं दी है जिन में से कुछ यह है:

१. हिरा पर्वता पे इस नियत से जाना की अल्लाह के करीब जा सको,और सूचना की यह एक पवित्री जगह है.

२.हिरा की तरफ हाथ उठा के प्रार्थना करना .

३. हिरा पे प्रार्थना करना .

४ इस पे लिखना .

५ इस की परिकृमा करना .

६ हिरः की धुल या पत्थर साथ लेजाना इस उम्मीद में आप को बरकत हासिल होगे.

७ कागज़ के टुकड़ों पे लिखकर , वोह काकाज वहीँ रख जाना ,और उम्मीद करना की बेमार ठीक होजायेगा,या इस्पे जिस का नाम लिखा हो वोह हज कर ले गा .

ये सब चीजें गलत है, शिर्क अल्लाह ने एय करने का हुकुम नहीं दिया है.

VISION رؤية 2030
المملكة العربية السعودية
KINGDOM OF SAUDI ARABIA

المملكة العربية السعودية
الرئاسة العامة
لهيئة الأمر بالمعروف والنهي عن المنكر
الإدارة العامة للتوعية

थोर पर्वता

इसको जांच किया है:
डा. शैख़ मुहम्मद बिन फ़हद अल फ़ुरैज

الرئاسة العامة لهيئة الأمر بالمعروف والنهي عن المنكر - الإدارة العامة للتوعية
هاتف ٠١١٤٩٠٨٤٨٦، فاكس ٠١١٤٩٠٨٥٦٦،
ص. ب ١٤٠٣٣ الرياض ١١٤٢٤ المملكة العربية السعودية
www.pv.gov.sa

هندي

थोर पर्वता

१· इस की सचाईयाँ .

इस पर्वता की गुफा में ही आप(ﷺ) और अबू बकर मिदिना में हिजरत करने के दूरं चुफे थे.

अंस (अल्लाह इन से खुश हों) ने कहा " अबू बकर नै मुज से कहा की " मई आप(ﷺ) कई साथ था और मैं काफिरून के पेरून के निशाँ देखे और कहा आय कहा कई पैगम्बर अगर कोई इस की टांग उठाये गा तो यह हमें देख ली गा तो आप(ﷺ) ने जवाब दिया " तुम इस बारे में क्यूँ सूच रहा हो,

हमें बचाने के लिये खुदा है ."""

हालन की ये कहीं लिखा या सुना नहीं गे अहै और अगर कहीं लिखा भी गया है या तो वोह जूठ है या उस का सबूत कमज़ोर है जो इस की सचाई ज़ाहिर नहीं करसकता है.

इसलिये इस पे इबादत कर या इस की चडाई करना मन है,और न हज और उमरह के दूरं इस की चढाई करने का हुकुम है.

सहय्ख अल इस्लाम इब्न तय्मिय्याह केहते हैं " आप (ﷺ) नै मक्काह से मदीना हिजरत की और फिर चार उमरह किये और

आप के साथियुं ने भी यही किया और कोई पीछे नहीं रहा ,मगर न आप(ﷺ) ने और न आप के किसी साथी ने न हिरा या उस के इर्द गिर्द किसी भी जगह जा कर इबादत की. आप(ﷺ) और आप(saw) के साथियुं ने सिर्फ मस्जिद अल हराम, सफा,मारवाह के बीच ,मुज्दालिफ्हा और अराफात में इबादत की. और फिर आप(ﷺ) के बाद सहीह खलीफाओं में से भी कोई भी ऐसी गीसी गुफः या पर्वता पे नहीं गया .

यह एक सीधे सी बात है की अगर अल्लाह ने इसे करने के लिये कहा होता तो आप(ﷺ) ने हमे इसके